ध्रुवपद शैली के विकास में मध्यप्रदेश का योगदान

कामना सिसोदिया
शोधार्थी, बनस्थली विद्यापीठ
निर्देशिका–शर्मिला टेलर
बनस्थली विद्यापीठ, (राज.)

भारतीय संगीत की मध्यकालीन पद्धति ध्रुवपद है जो ख्याल, तुमरी, गजल आदि संगीत युग में अपनी ज्योति जलाए हुए है। ध्रुवपद 'सामवेद' की ऋचाओं से निकली हुई शास्त्रीय संगीत की प्राचीन शैली है जो आज भी जीवित है। 'ध्रुवपद' संस्कृत शब्द है जिसका व्युतिशास्त्र 'ध्रुव' व 'पद' से मिलकर बना। जिसमें 'ध्रुव' का संरचित अर्थ एक संयोजन और पद सूचित करना व रचना के साहित्य को शब्द या शब्दांश का प्रतीक करने के लिए होता है। राग, रस और काव्य का समन्वित स्वरूप ध्रुवपद की विशेषता है। "मानकुतूहल के उपलब्ध फारसी अनुवाद ग्रंथ 'राग दर्पण' के अनुसार 'ध्रुवपद' में चार पंक्तियां होती है। ध्रुवपद की भाषा देशी होती है। 'ध्रुवपद को समस्त रसों में बांधा जा सकता है।" 1 ध्रुवपद शैली के गायकों की कला–प्रस्तुति, शैलीगत विभिन्नता या रीति आदि के आधार पर चार बानियों का निर्माण हुआ जिन्हे गोबरहार, खण्डार, डागुर और नौहार नाम से अभिहित किया गया। ध्रुवपद गायन शैली जैसी दुर्लभतम धरोहर के नव–निर्माण तथा संरक्षण में मध्यप्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान है।

संगीत के क्षेत्र में मध्यभारत निःसंदेह अद्वितिय रहा। अनादिकाल से मध्यप्रदेश कला और संस्कृति का केन्द्र रहा है। देश में अपने मध्यवर्ती स्थान के साथ मध्यप्रदेश अपनी सांस्कृतिक समृद्धि के लिए भी भारत के हृदय के रूप में जाना जाता है। इस प्रदेश की उर्वरा भूमि में न केवल कला और साहित्य के महान् कलाकार उत्पन्न हुए बल्कि तानसेन जैसे महान संगीतज्ञों को भी अपनी संगीत साधना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मध्यप्रदेश में भोपाल, ग्वालियर, इन्दौर, उज्जैन, देवास, धार आदि जिलों में सर्वश्रेष्ठ ध्रुवपद गायको, बीन एवं पखावज वादकों का निवास रहा है। ध्रुवपद शैली के प्रचार प्रसार में मंदिरों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैष्णव सम्प्रदाय के कलाकार बाहर प्रदर्शन न करते हुए अपने दायरे अर्थात केवल मंदिरों में भगवान की भक्ति के लिए ही गाते थे। भक्ति में कीर्तन की श्रेष्ठता सिद्ध होने के कारण आदिकाल से ही संगीत देवताओं को प्रसन्न करने का प्रमुख साधन रहा है। मुगल दरबार में नित्यनवीन सांगीतिक प्रयोगों से ध्रुवपद अधिक परिष्कृत, व्यवस्थित एवं चर्चित हुआ जबकि विष्णुपद ने स्वाभाविक गति और पारम्परिक ढंग से हरि कीर्तन के साथ मंदिरों में अपने अस्तित्व को बनाये रखा। ध्रुवपद गायन की सुरक्षा के लिए चार सम्प्रदाय बने– पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय, चैतन्य सम्प्रदाय, गौड़िया सम्प्रदाय तथा राधा–वल्लभी सम्प्रदाय। इन चारों सम्प्रदायों द्वारा ध्रुवपद मंदिरों में परम्परानुसार गाए जाते थे तथा मंदिरों में पूजा–पाठ, भक्ति तथा भगवान का गुणगान संगीत के माध्यम से किया जाता था। ध्रुवपद पर आधारित गायकी को अपनी छाती से लगाए हुए ये पुष्टिमार्गीय वैष्णव मंदिर आज भी प्राचीनता की गरिमा को संभाले हुए मानो कह रहे हैं कि भारतीय संगीत के क्षेत्र में प्राचीन वैभव की रक्षा करने के लिए हमने जो कुछ किया वह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। मध्यप्रदेश के कई मंदिरों में आज भी नियमित रूप से ध्रुवपद गायन द्वारा भगवान की पूजा–अर्चना होती है। उज्जैन में श्रीनाथजी का मंदिर, पुरूषोत्तमजी का मंदिर, जनार्दन मंदिर, मदनमोहनजी का मंदिर, गोवर्द्धनाथजी का मंदिर, इन्दौर में श्रीनाथजी का मंदिर आदि जगहों पर नियमित ध्रुवपद गायन होता है। वर्तमान में इन्दौर में श्री गोकुलोत्सव जी महाराज वैष्णव परम्परा के ध्रुवपद गायक है जो बहुत ही गुणी गायक होने के साथ पखावज वादक भी है। "उज्जैन के श्रीनाथद्वारा मंदिर में श्री गट्टूलालजी मास्टर कीर्तनकार थे। वर्तमान में श्री रामचन्द्र कीर्तनकार है। "उज्जैन के पुरूषोत्तमजी के मंदिर में श्री कृष्णकुमार जी रावत कीर्तनकार है। इन्दौर में श्रीनाथजी के मंदिर में श्री दीनानाथ व्यास और उनके छोटे भाई श्री दाऊदयाल व्यास दोनों गायक कीर्तनिया थे। दीनानाथ जी बीन और सितार भी बजाते थे। केशवरावजी आप्टे से ध्रुपद सीखे थे।" 2 ध्रुवपद शैली को जीवित रखने का श्रेय मंदिरों के साथ–साथ राजदरबारों को भी है। जिस प्रकार भक्त संगीतज्ञों का उद्देश्य मंदिरों में भगवान को प्रसन्न करना था, उसी प्रकार राजदरबारों में राजा महाराजाओं का मनोरंजन करना था। दरबारी संगीतज्ञों ने अपने मधुर शास्त्रीय एवं व्यवहारिक संगीत से समाज एवं संस्कृति पर ऐसा चमत्कृत प्रभाव डाला कि समाज में एकरूपता एवं समन्वयता को विशेष बल मिला। इन दरबारी कलाकारों को सर्वप्रथम ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के दरबार से आरम्भ करते है। ध्रुवपद शैली के नवनिर्माण में ग्वालियर के तोमर वंशीय राजा मानसिंह का विशिष्ट स्थान है। "ग्वालियर पर उनका शासन सन् 1486 से 1518 तक रहा। बैजू, बख्शू, चरजू आदि प्रसिद्ध गायक–वादक उनके दरबार में थे, जिनकी सहायता से एक ग्रन्थ 'मानकुतूहल' रचा गया। सन् 1673 में फकीरूल्ला ने इस ग्रन्थ का अनुवाद 'राग–दर्पण' के नाम से किया।" 3 राजा मानसिंह तोमर ने जन–सामान्य में प्रचार प्रसार के लिए संस्कृत के स्थान पर

लोकभाषा को राजसभा में आश्रय देकर लोकभाषा में ही ध्रुवपदों की रचना करवाई। इन्होंने विष्णुपदों के रूप में भक्तिपरक पदों की रचना कराई। "मानसिंह तोमर और बैजू के प्रयत्नों से ध्रुवपदों का यह राजमार्ग पुनः खुल गया, जो शताब्दियों से अवरूद्ध हो गया था। यहाँ तक कि मुगल दरबार में गजलों का रंग भी फीका पड़ गया।" 4

ध्रुवपद शैली के विकास का मुख्य केन्द्र 'ग्वालियर' बना। इसका श्रेय सर्वप्रथम राजा डूंगरेन्द्र सिंह संवत (1525–1551 ई.) को जाता है जिन्होने आमिर खुसरो द्वारा प्रचारित संगीत का बहिष्कार कर लोकभाषा हिंदी में 'विष्णुपदों' की रचना की जिसका प्रचार मथुरा, वृन्दावन के मंदिरों में स्वामी हरिदास ने किया। राजा डूंगरेन्द्र सिंह के पश्चात् मानसिंह तोमर ने इन्ही 'विष्णुपदों में विभिन्न प्रयोग व परिवर्तन कर ध्रुवपद के दरबारी स्वरूप की रचना की। बैजू ब्रजभाषा के आदि कवि थे, उनकें द्वारा गोपाल, बख्शू, तानसेन आदि ध्रुवपद गायकों को प्रशिक्षण दिया गया। यह दरबारी संगीतज्ञ पदों के आधार पर रागों का चयन करते थे तथा उन्हे स्वरबद्ध करके गाते थे। राजा मानसिंह ने तीस वर्ष के शासन में ध्रुवपद को उभारा और अपने शासन काल के दौरान ग्वालियर विद्यालय की स्थापना की। बैजू की प्रतिभा को अमर चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से महारानी मृगनयनी और राजा मानसिंह ने ग्वालियर संगीत विद्यापीठ नामक एक संगीत संस्था का निर्माण किया। ग्वालियर संगीत विद्यालय से शिक्षित होकर तानसेन को विभिन्न राजाओं का राजाश्रय प्राप्त हुआ जिनमें से एक रीवा नरेश राजा रामचन्द्र थे। लक्ष्मीनारायण गर्ग के कथानुसार "तानसेन की संगीत साधना जिस समय चरमोतकर्ष पर थी उस समय रीवा के महाराजा रामचन्द्र तानसेन को वृन्दावन से अपने दरबार ले गये। गर्ग के अनुसार 1556 ई. तक तानसेन रामचन्द्र के दरबार में रहे।" 5 तानसेन अपने समय के सर्वाधिक प्रसिद्ध दरबारी संगीतज्ञ थे। तानसेन की प्रमुख रचना ध्रुवपद है जो लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध है। इनके उपलब्ध ध्रुवपदों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वे अधिकतर देव–वन्दना, ज्ञान–भक्ति, राजप्रशंसा, संगीत विवेचन, नायिका भेद और कृष्ण लीला से सम्बन्धित है। देव वन्दना विषयक ध्रुवपदों में गणेश, सरस्वती, शंकर, दुर्गा आदि हिन्दू देवी–देवताओं की स्तुति की गई है। इसके अतिरिक्त इस्लाम धर्म के पीर, पैगम्बर के प्रति भी अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। "निम्न पद से स्पष्ट होता है कि तानसेन सभी धर्मो का आदार करते थे–

तुम रब, तुम साहेब, तुम ही करतार,
घट–घट पूरन जल थल भर भार।।
तुम ही रहीम, तुम ही करीम,
गावत गुनी–गंधर्व, सुर नर, सुर नार।।
तुम पूरन ब्रह्म, तुम ही अचल
तुम ही जगद्गुरू तुम ही सरदार।
कहै मियां तानसेन तुम ही आप
तुम ही करत सकल जग को भवपार।" 6

बख्शू को 'नायक' की उपाधि राजा मानसिंह से प्राप्त हुई। बख्शू राजा मानसिंह तोमर के सर्वश्रेष्ठ दरबारी गायक थे। "बैजू, बख्शू एवं तानसेन इत्यादि के बहुत से ध्रुवपद कलकत्ता से प्रकाशित 'रागकल्पद्रुम' में संग्रहित है। शाहजहाँ ने बख्शू के 1000 ध्रुवपदों को 'सहसरस' शीर्षक से संग्रहित कराया, जो देवनागरी लिपि में संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ।" 7

मध्यप्रदेश के इन्दौर क्षेत्र में श्रीमन्त तुकोजीराव होलकर के दरबार में उस्ताद नसीरुद्दीन खाँ अपने समय के सर्वश्रेष्ठ गायक थे। इसके पुत्र नसीर मोइनुद्दीन, अमीनुद्दीन, जहीरूद्दीन और फैयाजुद्दीन अपने नाम के आगे 'डागर' लगाते थे तथा इन्ही डागर बन्धुओं ने आज ध्रुवपद को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उज्जैन के श्री तातु भैया को सैकड़ों ध्रुवपद कण्ठस्थ थे। कुल लोगों के मतानुसार इनके पास लगभग दस हजार ध्रुवपद संग्रहित थे। उज्जैन के श्री रामशंकर शुक्ल को महाराजा जीवाजीराव सिंधिया को ध्रुवपद सुनाने का अवसर प्राप्त हुआ था। धार के श्री धोन्डू भैया सर्वश्रेष्ठ पखावज वादक थे। संगत करने के साथ यह स्वतंत्र रूप से भी प्रस्तुति देते थे। इनके अतिरिक्त श्रीलालजी बुवा और दत्तात्रय बलवन्त दीक्षित भी अपने समय के सर्वश्रेष्ठ गायक थे। श्रीलालजी बुवा ध्रुवपद गायन के अतिरिक्त धमार, ख्याल, टप्पा आदि गाते थे। दत्तात्रय बलवन्त इनके ही शिष्य थे। उज्जैन के श्री केशवनारायण आप्टे ध्रुवपद, प्रबन्ध, तराना में जयदेव कवि रचित अष्टपदी तथा सूरदास के भजन आदि गाते थे। प्रसिद्ध पखावज वादक नानासाहेब पानसे इन्दौर के होल्कर दरबार में रहे। नाना साहेब पानसे ने 'सुदर्शन' नामक एक नवीन ठेके की रचना की। यह रचना इन्होने तबला वादकों की सम्मान रक्षा हेतु की। उत्तर भारत में पखावज के दो घरानों में से एक नाना साहेब पानसे के नाम से प्रसिद्ध है। वर्तमान में ध्रुवपद गायन शैली को सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञों जैसे पंवार बन्धु, डागर बन्धु, गुन्देचा बन्धु आदि ने सम्भाला हुआ है। इन्दौर के श्री सुखदेव तथा कैलाश पवार आकाशवाणी के ए ग्रेड ध्रुवपद कलाकार है। 'पवार बन्धु' ने 1985 में ध्रुवपद कलाकेन्द्र द्वारा 'चुन्नीलाल पंवार स्मृति' समारोह के नाम से ध्रुवपद समारोह आयोजित किया। 'गुन्देचा बन्धु' की जोड़ी ध्रुवपद गायन के क्षेत्र में प्रसिद्ध है। उज्जैन के माधव संगीत महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त इन्होने 'ध्रुपद केन्द्र' भोपाल में उस्ताद जिया फरीउद्दीन डागर और उस्ताद मोइनुद्दीन डागर से उच्च शिक्षा एवं गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया।

ध्रुवपद गायन शैली को सहेजने में मध्यप्रदेश शासन निरंतर प्रयास कर रही है। मध्यप्रदेश में सांस्कृतिक विकास के लिए शासन द्वारा 1980 को सांस्कृतिक विभाग का गठन किया गया। 1980 में मध्यप्रदेश सरकार ने 'ध्रुपद केन्द्र' की स्थापना की। 'ध्रुपद केन्द्र' में उच्चकोटि के संगीतज्ञों द्वारा शिक्षण दिया जाता है। ध्रुवपद धमार के पारम्परिक डागर परिवार के उ. फहीउद्दीन डागर गुरू के पद पर आसीन हुए। राज्य सरकार द्वारा कई समारोह आयोजित किये गये, जैसे 1982 में डागर सप्तक जो डागर घराने के सात उस्तादों पर केन्द्रित था। 1981–85 में 'ध्रुवपद–समारोह', 1983 में 'धमार–समारोह' आदि आयोजित किए गए। मध्यप्रदेश के कई युवा कलाकार विदेशों में भी अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके है, जिनमें पवार बन्धु, डागर बन्धु, गुन्देचा बन्धु, उदय भावलकर, प्रवीण आर्य जैसे नाम उल्लेखनीय है। "सन् 1989 में जि. मोहिनुद्दीन डागर ने हॉलैंड में, उ. एच. सईदुद्दीन डागर ने फ्रांस, बेल्जियम, हॉलैण्ड एवं जर्मनी में कार्यशालाएं एवं रेडियो रिकॉर्डिंग के लिये दौरा किया।

1989 नवम्बर एवं दिसम्बर में पैरिस की ध्रुवपद सोसायटी में डागर युगल वासिफुद्दीन एवं जहिरूद्दीन डागर ने ध्रुवपद गायन किया व तीन महफिलें व कार्यशालाएं की, जिसे रेडियो फ्रांस मौजिके ने रिकॉर्ड किया व स्वीट्जरलैण्ड ने एक कॉम्पेक्ट डिस्क भी बनाई। 1989 में ही न्यूयार्क में अमेरिका की ध्रुवपद सोसायटी में उ. रहीमफहीमुद्दीन डागर के मार्च 1988 में रिकार्ड कराये राग काम्बोजी की कॉम्पेक्ट डिस्क प्रकाशित हुई।" 8 इस प्रकार देश–विदेश में आयोजित ध्रुवपद समारोहों द्वारा ध्रुवपद शैली के प्रचार–प्रसार के शुभ संकेत प्राप्त होते है। इन्ही डागर, पवार, गुन्देचा बन्धुओं द्वारा ध्रुपद केन्द्रों की स्थापना हुई जहाँ देश–विदेश से शिष्य ध्रुवपद शैली को सीखने आते हैं। इस प्रकार संगीतज्ञों ने अपनी कला और साधना द्वारा मध्यप्रदेश को गौरवान्वित किया और यही कारण है कि प्रदेश का सांगीतिक इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण है।

सन्दर्भ सूची :

1. ब्रहस्पति कैलाश चन्द्र देव, ध्रुवपद और उसका विकास, पृ. 244
2. टेलर शर्मिला, मालवा में ध्रुपद शैली की परम्परा, पृ. 76
3. श्रीमाल प्यारेलाल, मध्यप्रदेश के संगीतज्ञ, संगीत फरवरी 2007, पृ. 29
4. यजुर्वेदी सुलोचना, बृहस्पति आचार्य, खुसरो तानसेन तथा अन्य कलाकार, पृ. 106
5. सिंह एषा, संगीत सम्राट तानसेन, पृ. 29
6. टेलर शर्मिला, मालवा में ध्रुपद शैली की परम्परा, पृ. 57
7. तैलंग मधुभट्ट, ध्रुपद गायन परम्परा, पृ. 14
8. तैलंग मधुभट्ट, ध्रुपद गायन परम्परा, पृ. 165